

गेहूँ हमारे देश की प्रमुख फसल

गेहूँ हमारे देश की प्रमुख फसल है। क्षेत्रफल के अनुसार देखा जाए तो संसार में धान के बाद गेहूँ का ही दूसरा स्थान आता है। आज सरकार की कई योजनाओं के अंतर्गत उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन, गुणवत्ता व वितरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अच्छा उत्पादन एवं उत्पादकता प्राप्त करने के लिए उचित गुण वाली नई व उन्नत किस्मों की आवश्यकता होती है।

किसान अपने आत्मविश्वास के बल पर धरती माँ की गोद को हवा भर बनाता है परंतु यदि बीज अच्छी गुणवत्ता का नहीं हो तो वांछित उत्पादन प्राप्त नहीं हो सकता है। गेहूँ की खेती प्रदेश के विभिन्न फसल पद्धतियों वाले क्षेत्रों में कड़ा की भूमि, जलवायु तथा उपलब्ध संसाधनों के अनुकूल नहीं की जाती है। संभवतः उत्पादन की कमी का यह प्रमुख कारण है। प्रदेश की अलग अलग भू जलवायु क्षेत्रों में संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार उपयुक्त उत्पादन तकनीकी अपनाने गेहूँ की उत्पादकता में वृद्धि की असम संभावनाएँ हैं। देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण बेरोजगारी एक बहुत ही बड़ी समस्या का रूप लेती जा रही है। पड़े-लिखे ग्रामीण युवा यदि बीज उत्पादन का व्यवसाय अपनाये तो देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होने के साथ-साथ बेरोजगारी भी दूर होगी।

बीज एक वैज्ञानिक विधि द्वारा तैयार किया जाता है। सही ढंग से उपचारित, पैक, चिह्नित एवं उचित ढेर प्रदर्शित करता है। वह अपनी जाति व गुणों के मानकों के अनुरूप होता है। अच्छे बीज रोग, कीट, खरपतवार व अन्य फसल के बीज व अन्य बाहरी पदार्थों से मुक्त रहता है। यह भौतिक व आनुवंशिक रूप से शुद्ध होता है। इसका अंकुरण प्रतिशत, नमी प्रतिशत मानकों के अनुरूप होता है। किसान भाई खराब गुणता वाले बीजों का उपयोग कर कृषि के अलग कर्मायों पर जैसे खाद, खरपतवारनाशी, कीट रोग व्याधि नाशी रसायनों आदि पर खर्च करते हैं परंतु यदि किसान खराब बीज न बोकर शुद्ध बीज, अच्छी गुणता वाले बीज बोएँ तो कृषि के अन्य खर्चों में कमी कर सकते हैं। आइये हम जानें कि अच्छे गेहूँ बीज उत्पादन प्राप्त कैसे करें।

भूमि का चुनाव

गेहूँ के लिए दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है। वैसे इसकी खेती उचित जल प्रबंधन के साथ सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है। अर्धसिंचित दशा में जमीन की जल धारण क्षमता अधिक होने पर ही गेहूँ की खेती करना चाहिए। मुदा का पी.एच. 5.5 से 7.5 होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करना चाहिए। वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों में छोटे-छोटे कन्टर बनाकर भूमि के कटाव और वर्षा जल को रोकना चाहिए। अधिक वर्षा तथा भारी भूमि वाले क्षेत्रों में कहीं कहीं पर खरीफ की कम वर्षा वाली फसलें तथा शीघ्र फकने वाली जातियों की कटाई के बाद भूमि में पर्याप्त नमी उपलब्ध होने पर गेहूँ की खेती बिना सिंचाई से ही की जा सकती है। सिंचित क्षेत्रों में खरीफ फसल की कटाई के तुरंत बाद ही जमीन की परिस्थिति के अनुसार जुताई करना चाहिए। यदि खेत कड़ा हो तो सिंचाई देकर जुताई करें। सिंचाई के बाद बतार आने पर दो या तीन बार बखर या हल चलाकर खेत को धुरधुर बनाकर अंत में पाटा चलाकर भूमि को समतल कर लेना चाहिए। भूमि को धुरधुर करने से अंकुरण अच्छा होता है।

बीज स्रोत

आधार बीज तैयार करने के लिए प्रजनक या

आधार बीज और प्रमाणित बीज उत्पादन के लिए आधार बीज किसी प्रमाणीकरण संस्था के मान्य स्रोत से प्राप्त किया जाता है। बोने से पूर्व बीज थैलों पर लगे लेबल आदि से बीज की किस्म की शुद्धता की जांच कर लेनी चाहिए और लेबल संभालकर रखने चाहिए।

प्रथमकरण दूरी

गेहूँ एक स्व-परगणित फसल है अतः गेहूँ की सभी जातियों को आपस में अच्छे बीज उत्पादन हेतु 3 मीटर प्रथमकरण दूरी अन्य जातियों से रखना चाहिए, लेकिन अनावृत कंड रोम से बचाव के लिए न्यूनतम प्रथमकरण दूरी 150 मीटर रखी जाती है।

बुवाई का समय

अर्धसिंचित 15 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक
अर्धसिंचित 15 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक
सिंचित समय से 10 नवम्बर से 25 नवम्बर तक
सिंचित, देरी से 25 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक

बीज की मात्रा

बीज की मात्रा (बै.कै.) बुवाई की विधि
100 सीधे कतारों में बुवाई
80-100 सीड ड्रिल कतारों में बुवाई
125 छिटकाव विधि से बुवाई
30-35 छिड़काव विधि से बुवाई
125-150 देरी से बुवाई के लिए

बीजोपचार

2.5-3 ग्राम थायरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करना चाहिए। लुजिस्ट की रोकथाम के लिए वीटावेक्स 2.5 ग्राम/किलोग्राम बीज उपचारित करना चाहिए। दीमक से प्रभावित क्षेत्रों में कीटनाशक दवा क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. 5 मि.ली./कि.ग्रा. बीज के हिसाब से बीजोपचार करना चाहिए। फूटनाशक व कीटनाशक से उपचारित करने के बाद बीज को एजेंटोवेक्टर 5-10 ग्राम एवं पी.एस.बी. कल्चर 5-10 ग्राम/कि.ग्रा. के हिसाब से बीज को उपचारित करना लाभप्रद है।

कतारों की दूरी

अर्धसिंचित दशा में 30 से.मी.
सिंचित समय से बोने 20-23 से.मी.
सिंचित पछेती बोनी 18 से.मी.
गुणता वाले बीज बोएँ तो कृषि के अन्य खर्चों में कमी कर सकते हैं। आइये हम जानें कि अच्छे गेहूँ बीज उत्पादन प्राप्त कैसे करें।

उन्नत जातियाँ

भारतवर्ष में निम्नलिखित प्रकार की ट्रिटिकम प्रजातियाँ उगाई जाती हैं-

एम.गेहूँ (ट्रिटिकम डायकोकम): यह भारत के दक्षिणी क्षेत्र जैसे महाराष्ट्र, तमिलनाडु, तथा कर्नाटक के कुछ भागों में उगाई जाती है। इसका क्षेत्रफल कुल क्षेत्रफल का मात्र 1 प्रतिशत है। इससे दक्षिण भारतीय डिश उष्णक बनाया जाता है।

मंजरोनी/काठिया गेहूँ (ट्रिटिकम इयुरम): इसका क्षेत्रफल कुल क्षेत्रफल का 12 प्रतिशत है। भारत में गेहूँ में इसका दूसरा स्थान है। यह मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के कुछ भागों में उगाया जाता है। यह पुरानी प्रजाति है। इसकी खेती सीमित सिंचाई तथा सूखे क्षेत्रों में अच्छी होती है। इसका उपयोग सूजी बनाने के लिए किया जाता है।

उन्नत किस्में

- एम.पी. 3336:** यह 90-105 दिन की फसल है। 48-52 किं.ट/हे. उन्नत प्राप्त होती है। इसके दाने बड़े तथा चमकदार होते हैं।
- एम.पी. 3288:** यह 120-122 दिन की फसल है। एक सिंचाई में 35-38 किं.ट/हे. उन्नत प्राप्त होती है। इसके दाने बड़े तथा चमकदार होते हैं।
- जी. डब्ल्यू 322:** यह 110-115 दिन की फसल है। 50-55 किं.ट/हे. उन्नत प्राप्त होती है। इसके दाने मध्यम बड़े, कठोर तथा अण्डाकार होते हैं। यह गेरूआ रोग के प्रति रोगरोधी किस्म है।
- जी. डब्ल्यू 366:** यह 110-115 दिन की फसल है। इसकी उपज लगभग 50-55 किं.ट/हे. है।



उपज प्राप्त होती है। इसके दाने बहुत बड़े, अण्डाकार व अम्वर कलर होते हैं। लगभग सभी प्रकार के रोगों के लिए रोगरोधी किस्म है।

5. जी. डब्ल्यू 273: इसके दाने बड़े, चमकीले अम्वर कलर व कठोर होते हैं। यह रोटी हेतु उपयुक्त किस्म है। 1000 दानों का वजन 47 ग्राम है। यह पत्ती व गेरूआ के लिए सहनशील किस्म है। उपयुक्त परिस्थितियों में औसत उपज 50 किं.ट/हे. प्राप्त होती है।

6. एच.डब्ल्यू 2004 (अमर): यह शरबती गेहूँ है। यह 130-135 दिनों की फसल है। ऊंचाई 110-120 से.मी. होती है। 1000 दानों का वजन 40-45 ग्राम होता है। इसकी बुवाई का समय 20 अक्टूबर से 10 नवम्बर का है। अर्धसिंचित या 1-2 सिंचाई की है। बाली पर रोए होते हैं। परिपक्व बाली का रंग सफेद होता है, दाना कड़ा, चमकीला व मध्यम आकार का होता है। उपज 15-30 किं.ट/हे. है।

7. एच.आई. 1500 (अमृत): यह 120-125 दिनों वाली शरबती गेहूँ की किस्म है। ऊंचाई 110-115 से.मी. होती है। समय पर बुवाई के लिए अनुशंसित है। बाली पर रोए उपस्थित रहते हैं दाना कड़ा चमकीला गोलाकार व मध्यम आकार का होता है। अर्धसिंचित या 1-2 सिंचाई की है। 1000 दानों का वजन 40-45 ग्राम होता है। उपज 20-30 किं.ट/हे. है।

8. एच.आई. 1531 (हर्षिता): 130-135 दिनों की फसल है। इसका दाना थोड़ा कड़ा, चमकीला, गोलाकार व मध्यम आकार का होता है। बालियों पर रोये होते हैं। अर्धसिंचित या 2-3 सिंचाई में अच्छा होता है। पौधे की ऊंचाई 92-95 से.मी. होती है। 1000 दानों का वजन 40-45 ग्राम होता है। उपज 25-40 किं.ट/हे. है।

9. एच.डी. 4672 (मालव रत्न): यह सूजी व दलिया के लिए सर्वोत्तम कटिया गेहूँ है। यह 120-125 दिनों की फसल है। बुवाई 15 अक्टूबर से 10 नवंबर के बीच में कर सकते हैं। दाना कड़ा चमकीला लंबा व उमरा हुआ होता है। बाली पर रोए नहीं होते हैं। पौधों की ऊंचाई 80-85 से.मी. होता है। 1000 दानों का वजन 50-55 ग्राम होता है। उपज 20-35 किं.ट/हे. है।

10. एच.आई. 8627 (मालव कीर्ति): इसकी परिपक्वता अवधि 130-135 दिन है। 1000 दानों का वजन 50-55 ग्राम होता है। दाना कड़ा चमकीला मध्यम आकार का उमरा हुआ होता है। 15 अक्टूबर से 10 नवम्बर के बीच बुवाई कर सकते हैं। उपज 20-45 किं.ट/हे. है। इसकी उपज तक प्राप्त होती है। यह उच्च गुणवत्ता से युक्त विटामिन 'ए' से परिपूर्ण है, जो कि सूजी, दलिया एवं रोटी के लिए उत्तम है।

11. एच.आई. 8638 (मालव क्रांति): इसकी बुवाई 15 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक कर सकते हैं। इसकी परिपक्व बाली का रंग सफेद होता है। दाना कड़ा, चमकीला व गोलाकार होता है। 1000 दानों का वजन 46-50 ग्राम होता है। ऊंचाई 95-105 से.मी. होती है। इसकी उपज 25-30 किं.ट/हे. है। यह उच्च गुणवत्ता से युक्त एवं विटामिन 'ए' से परिपूर्ण है, जो कि सूजी, दलिया एवं रोटी के लिए उत्तम है।

12. एच.आई. 1544 (पूर्णा): यह शरबती गेहूँ रोटी के लिए उत्तम है। इसकी बुवाई 10 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक कर सकते हैं। इसके लिए 4-5

सिंचाई आवश्यक होती है। इसका दाना थोड़ा कड़ा, चमकीला, गोलाकार होता है। पौधे की ऊंचाई 85-90 से.मी. होती है। यह 110-115 दिनों की फसल है। 1000 दानों का वजन 40-45 ग्राम होता है। उपज 50-55 किं.ट/हे. है।

13. एच.आई. 8381 (मालवश्री): यह उच्च गुणवत्ता युक्त कटिया गेहूँ है। यह 125 से 130 दिनों की फसल है। इसके 1000 दानों का वजन 50-55 ग्राम होता है। यह सिंचित किस्म है। लगभग 5-6 सिंचाई आवश्यक है। समय से बुवाई के लिए अनुशंसित है। इसकी बालियों पर रोये होते हैं। इसका दाना कड़ा, चमकीला, मध्यम लम्बा, बड़ा व उमरा लिये हुए होता है। इसकी उपज लगभग 50-60 किं.ट/हे. है।

14. एच.आई. 8498 (मालव शक्ति): यह सूजी व दलिया के लिए उत्तम कटिया गेहूँ है। यह 120-125 दिनों की फसल है। 4-5 सिंचाई की है। इसकी 10 नवम्बर से मध्य दिसम्बर तक बुवाई कर सकते हैं। इसकी ऊंचाई 80-85 से.मी. होती है। दाना कड़ा, चमकीला मध्यम आकार का बड़ा उमरा लिये हुए होता है। ऊंचाई 80-90 से.मी. है। सिंचित तथा देर से बुवाई के लिए अनुशंसित है। इसका दाना कठोर, चमकीला व आयताकार होता है। उपज लगभग 40-45 किं.ट/हे. है।

15. डी.एल. 788-2 (विदिशा): यह शरबती गेहूँ रोटी के लिए उत्तम है। 110-115 दिनों की फसल है। ऊंचाई 80-90 से.मी. है। सिंचित तथा देर से बुवाई के लिए अनुशंसित है। इसका दाना कठोर, चमकीला व आयताकार होता है। उपज लगभग 40-45 किं.ट/हे. है।

16. एच.डी. 2932 (पूर्णा - 111): यह 105-110 दिन की शरबती व रोटी के लिए उत्तम किस्म है। सिंचित, देर से बुवाई के लिए अनुशंसित है। इसका दाना कड़ा, चमकीला व लंबा होता है। उपज लगभग 40-45 किं.ट/हे. है।

17. जे.डब्ल्यू 1142: यह लगभग 119 दिन की फसल है। इसमें प्रोटीन की उच्च मात्रा होती है। यह गेरूआ रोगों के लिए प्रतिरोधी किस्म है।

18. जे. डब्ल्यू 3020: यह 120-130 दिनों की फसल है। इसका टेस्ट वेट 42 ग्राम है। इसका दाना चमकीला होता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 11.87 प्रतिशत होती है। यह रोटी के लिए उत्तम है। सभी प्रकार के गेरूआ रोगों के लिए प्रतिरोधी किस्म है। इसका दाना कड़ा, चमकीला व लंबा होता है। उपज लगभग 40-45 किं.ट/हे. है।

19. जे. डब्ल्यू 1106: यह 113 दिनों की फसल है। इसकी ऊंचाई मध्यम होती है। दाने बड़े, चमकीले व आकर्षित होते हैं। प्रोटीन की उच्च मात्रा होती है तथा पत्ती में गेरूआ रोग के प्रति प्रतिरोधी है। इसकी उपज 40-50 किं.ट/हे. है।

20. एम.पी. 4010: यह 107 दिनों की फसल है। इसके दाने बड़े होते हैं। उपज लगभग 42-45 किं.ट/हे. है। प्राप्त होती है।

21. जे.डब्ल्यू 28: यह 122 दिनों की फसल है। इसकी उपज लगभग 53 किं.ट/हे. है। यह समय पर बुवाई हेतु सुयोग्य है। सिंचित है तथा प्रोटीन की मात्रा 13.4 प्रतिशत होती है।

खाद एवं उर्वरक

खाद एवं उर्वरकों की मात्रा, गेहूँ की प्रजाति, खेती की पद्धति और सिंचाई की उपलब्धता के अनुसार देना लाभप्रद होता है। यदि संतुलित मात्रा देना है तो उसके लिए आवश्यक है कि खेत की मिट्टी का परीक्षण कराया जाए। निम्न उर्वरकों के अलावा 5-10 टन/हे. गोबर खाद या कम्पोस्ट खाद देने से उपज में वृद्धि होती है। सिंचित अवस्था में आधा नत्रजन, स्फुर एवं पोटेश की पूरी मात्रा आधार खाद के रूप में डालना चाहिए। शेष 1/2 नत्रजन में से 50 प्रतिशत प्रथम सिंचाई पर तथा 50 प्रतिशत दूसरी सिंचाई पर देना चाहिए। अर्धसिंचित अवस्था में नत्रजन, स्फुर एवं पोटेश की सम्पूर्ण खाद को आधार खाद के रूप में बीज के 2-3 से.मी. नीचे डालना चाहिए।